मम्मा से हमने सीखा, जीने का तरीका

जीवन के जिस पड़ाव तक मातेश्वरी जी का साथ मिला, उन्होंने एक सच्चे पथप्रदर्शक के रूप में हमें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। न केवल प्रेरणाएं ही दीं बल्कि अपने पवित्र एवं शक्तिशाली वायब्रेशन्स से इतनी शक्ति हममें भर दी कि अपने जीवन में जो करना या जो पाना हमें असम्भव लगता था, वो सब सहजता से ही हो गया। माँ के रूप में प्यार और वात्सल्य देकर हर बच्चे के जीवन को खुशियों से भर दिया और एक कुशल प्रशासक के रूप में हरेक का दिव्य गुणों से श्रृंगार कर यज्ञ को मज़बूती प्रदान की। ऐसी थी हमारी मातेश्वरी जगदम्बा, जो सबकी माँ बन गयी और जिन्हें सभी प्यार से मम्मा बुलाने लगे.....

रोम रोम में समाया था ज्ञान

मम्मा जिस विषय को उठाती थी उसकी अत्यन्त गहराई में चली जाती थी। गहराई के साथ समझाने की विधि बहुत सरल, सहज और रमणीक होती थी। सुनने वालों को धारणा भारी और कठिन नहीं लगती थी। सचमुच, सुनने वाले को लगता था कि वे विद्या की देवी सरस्वती हैं और उनकी विद्या से उनका जीवन धारणा रूपी धन से सम्पन्न हो रहा है।

उनकी धारणा बहुत उच्च कोटि की थी। मम्मा बोलती बहुत कम थी। केवल क्लास में या किसी से व्यक्तिगत रूप में मिलते समय ही हम उनकी आवाज़ सुनते थे। परमात्मा की याद में लवलीन रहने की उनकी एक स्वाभाविक स्थिति होती थी। उनके आस-पास के प्रकम्पनों से जो अपनेपन का अनुभव होता था वह बहुत सुखद प्रतीत होता था। उनके हर शब्द में ज्ञान समया रहता था। यूँ कहें, उनके रोम-रोम में ज्ञान समाया हुआ था। उनको देखते ही परमात्मा की याद में हमारा मन मगन हो जाता था।

मम्मा में संगठन करने की शक्ति बहुत श्रेष्ठ और ज़बर्दस्त थी, सबको साथ लेकर चलने की कुशल कला थी। उनमें व्यक्तिगत धारणायें थीं, उदाहरणार्थ बाबा ने कहा और मम्मा ने धारण किया- इसमें नम्बर वन थी। समर्पित होने का उनका वह तरीका, जिसको झाटकू कहते हैं, कई भाई-बहनों के लिए एक आदर्श बना, बहुतों के जीवन-उद्धार का प्रेरणा-स्रोत बना। सबसे बड़ी बात कि उनको सबने यज्ञमाता के रूप में स्वीकार कर लिया था। कभी किसी ने यह नहीं सोचा कि इनकी उम्र क्या है, मेरी उम्र क्या है। किसी धर्म, जाति, पंथ वाला हो, हरेक ने यही बेहद का अनुभव किया कि यह मेरी माँ है, मेरी हितचिन्तक है। उस महान आत्मा में इतनी शक्ति थी! इसलिए, ड्रामा कहिये या बाबा कहिये, उनको ही यज्ञमाता, मातेश्वरी, मम्मा बनाया गया।

- राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

24 जून, स्मृति दिवस

हर कदम में बनीं पथप्रदर्शक

मम्मा हमें शिक्षा देती थी कि आपस में बहुत धीमे स्वर में बात करनी है, यहाँ तक कि दो बात करते हैं तो तीसरे व्यक्ति को सुनाई नहीं देनी चाहिए। मम्मा चलती भी ऐसे थी कि किसी को पता भी नहीं पड़ता था कि मम्मा आयी कब और गयी कब। वो कहती थी कि हम देवता बनने वाले हैं इसलिए हमारी चाल देवताओं जैसी होनी चाहिए। मम्मा ने यह भी सिखाया कि कैसे एक-दूसरे को बुलाना होता है। जब हम मुम्बई में रहते थे तो हमारे घर के सामने हमारी नानी का घर था। जब हमें किसी को बुलाना होता था तो हम अपने घर में ही रहकर आवाज़ से बुलाते थे कि इधर आओ, यह बात सुनो। एक बार वहाँ क्लास में मम्मा ने सुनाया कि एक-दूसरे को ज़ोर से आवाज़ देकर नहीं बुलाना चाहिए, उस व्यक्ति के नज़दीक जाकर कहो, आपसे हमें कुछ बात करनी है, आप आओ। मम्मा कहती थी कि अगर कोई आपको शिक्षा देता है तो उसको प्यार और संयम से सुनना चाहिए। उसी समय कोई जवाब नहीं देना है। हो सकता है कि वह बात अभी लागू नहीं होती हो, शायद भविष्य में काम आने वाली हो। इसलिए शिक्षा को सम्मान से स्वीकार भी करना चाहिए।

मुझे रंगीन कपड़े पहनने का और दो चोटी बनाने का बहुत शौक था। एक रात्रि को मैं बृजेन्द्रा दादी के साथ मम्मा को गुड नाइट करने गयी। तब मम्मा ने कहा, सरला, तुमने देवियों की तस्वीर देखी है, उनके बाल कैसे दिखाते हैं? फिर मम्मा ने कहा, देवियों के बाल या तो खुले रहते हैं या एक ही चोटी होती है। ऐसे कहते हुए उन्होंने मेरी दोनों चोटियों को खोलकर हमेशा के लिए एक बना दिया। इस प्रकार, मम्मा बच्चों को कदम-कदम पर सावधानी और शिक्षा देती थी। यहाँ तक कि मम्मा ने ही मुझे साड़ी पहनना सिखाया, गुरुमुखी लिखना-पढ़ना सिखाया। **- ब्र.कु. सरला दीदी, अहमदाबाद**

उनके हरेक बोल वरदान बन गये

मैंने जब इस यज्ञ में समर्पित होने का सोचा तो मुझे थोड़ा-सा ताऊ जी का बन्धन आया लेकिन बाबा का बहुत ही साथ और मदद मिली। हमारे ताऊ जी की ऐसी इच्छा थी कि मैं बहुत ही अच्छी तरह से, धूमधाम से अपनी बच्ची की शादी कराऊँ लेकिन मैं मन में पक्का कर बैठी थी कि चाहे कुछ भी हो, मुझे ब्रह्माकुमारी बहनों जैसा जीवन बनाना है और खूब बाबा की सेवा करनी है। मित्र-सम्बंधियों की ओर से भी मुझे कोई साथ नहीं मिलता था, और ही सब विरोधी बन गये। मेरे माता-पिता की इच्छा थी कि बच्ची ब्रह्माकुमारी बने। कोई भी सेवा करते मुझे अलौकिक ख़ुमारी चढ़ी रहती थी। पढ़ी-लिखी भी नहीं थी, इसलिए अंदर ही अंदर बहुत सोचती रहती थी। फिर मुझे विचार आया कि मैं अंदर की बात और बंधनों की बात बाबा-मम्मा को पत्र द्वारा सुना हूँ। मैंने मम्मा और बाबा को पत्र में लिखा, मम्मा, मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, मुझे कुछ भी आता नहीं है और मुझे हमेशा के लिए सेन्टर पर ही रहना है, तो मैं क्या करूँ और कौन सी बातों का ध्यान रखूँ?

कुछ दिनों के बाद मम्मा का पत्र आया। मम्मा ने बहुत ही प्यार भरा पत्र लिखा था। बहुत मीठी, बहुत अच्छी जीवन में ध्यान रखने जैसी बातें पत्र में लिखी हुई थीं। मैंने एक बहन को बुला करके सारा पत्र सुना। पहले तो मम्मा ने लिखा था कि बच्ची, जब तुम अपने घर से बाबा के घर में आओ तो यह याद रखना कि यह मेरा सदाकाल के लिए घर है। इस घर के सिवाय और मेरा कोई घर नहीं है। बाबा-मम्मा और दैवी परिवार के सिवाय मेरा और कोई परिवार नहीं है। दूसरा, बाबा ने लिखा था कि यह भी याद रहे कि मैं जीवित आयी थी, अब बाबा के घर से मरकर निकलूंगी। तीसरी बात, बच्ची, ये ध्यान रखना कि सेवा-अर्थ बहुत-सी जगहों पर जाना पड़ता है सो कभी भी एक घर की बात दूसरे घर नहीं बताना। इन सब बातों को अमल में लाकर, बाबा का अन्त तक बने रहेंगे। जैसे कन्या की शादी हो जाती है तो वह पिछले घर को छोड़कर और भूलकर ससुराल घर की बन जाती है। तब ही वह अच्छी तरह सबको और अपने को खुश रख सकती है। ऐसे ही जहाँ भी बाबा भेजे, जैसे भी रखे, जैसा भी स्थान हो, जैसे भी साथी हों, हमें अच्छी तरह से सबके साथ रहना है। सबके साथ स्वभाव-संस्कार मिल जायें-ऐसे चलना है। बस वो दिन और आज का दिन मुझे यह शिक्षा सदा याद रहती है। ये बोल कोई साधारण बोल नहीं थे, बल्कि ये बोल मेरे लिए वरदान बन गये। बस, बाबा-मम्मा के वरदानों से ही और सब आत्माओं की दुआओं से चल रही हूँ। **- ब्र.कु. कैलाश बहन, गांधीनगर**